प्रेमचंद के कथा साहित्य में पाश्चात्य प्रभाव और भारतीय समाज

[1] सरोज शर्मा, [2] डॉ. नवनीता भाटिया (एसोसिएट प्रोफेसर)
[1]शोधार्थी, [2]पर्यवेक्षक
[1–2] ग्लोकल स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड सोशल साइंस, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर, (उत्तर प्रदेश)

सार
मुंशी प्रेमचंद के कथा साहित्य में पाश्चात्य प्रभाव और भारतीय समाज की जटिलताओं का गहरा चित्रण देखने को मिलता है। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया, जिसमें भारतीय परंपराओं और पाश्चात्य विचारधाराओं के बीच संघर्ष को प्रमुख रूप से दिखाया। उनके पात्रों के माध्यम से उन्होंने समाज की संरचनाओं, धार्मिक मान्यताओं और महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण पर तीखे प्रहार किए हैं। प्रेमचंद का साहित्य समाज में सुधार की आवश्यकता को प्रस्तुत करता है, साथ ही उन्होंने भारतीय समाज के मानसिक और सांस्कृतिक बदलावों को दर्शाया है। उन्होंने अपनी कहानियों में सामाजिक सुधार और समानता की आवश्यकता को प्रमुखता दी है, जिनमें खासकर महिलाओं की स्थिति, सामाजिक न्याय और मानवता के सार्वभौमिक मूल्यों को केन्द्रित किया गया है। प्रेमचंद ने अपने लेखन में समाज के ठेकेदारों पर तीखा व्यंग्य किया है, जो स्वयं असत्य और अन्याय में लिप्त हैं, और उन्होंने यह दिखाया कि समाज में बदलाव लाने के लिए एक व्यक्ति का दृढ़ संकल्प आवश्यक है।
प्रमुख शब्दः प्रेमचंद, पाश्चात्य प्रभाव, भारतीय समाज, सामाजिक सुधार, व्यक्तिचित्र, सामंती मानसिकता, महिला संवेदना, सामाजिक न्याय, यथार्थवादी लेखन, धर्म और समाज।

भूमिका

मुन्शी प्रेमचंद के सामाजिक कहानियों मे विचारों का चिंतन सूक्ष्मतापूर्ण दिखाई देता है। रचनाकारों द्वारा अनुभूत समस्या किस वस्तु विशेष या घटनाविशेष से संबंधित है। इसे व्यक्तिचित्रों के अध्ययन द्वारा जाना जा सकता है। किसी भी वस्तुविशेष का वर्णन रचनाकारों की दृष्टि से अलग हो सकता है तथा सर्वसामान्य की दृष्टि से भी अलग हो सकता है। समाज को अपने साहित्य में वस्तुरूप में चित्रित करना रचनाकारों की विशेषता ही मानी जा सकती है। "उस दृष्टि से प्रेमचंद के कथानकों को अलग–अलग केन्द्रबिन्दु से अवलोकित करने का प्रयास है। लेकिन प्रेमचंद उपन्यासकारों के सामाजिक चिंतन का वैशिष्ट व्यक्ति चित्रों में प्रगट होता है।" उसी के साथ उपन्यासकारों की मानससंतति (व्यक्तिचित्र) के माध्यम से नूतन दृष्टि की प्रतीति होती है। कथ्य व्यक्तिचित्रण के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। चरित्र मनुष्य से संबंधित होता है। लेकिन चरित्र चित्रण मानवीय होता है। इसलिए एक ही व्यक्तिचित्रण में कई वैशिष्ट दिखाई देते हैं। मुन्शी प्रेमचंद के कहानियों के व्यक्तिचित्रण अभिनव तो हैं ही, पर विचार प्रगटन की दृष्टि से बहुरूपीय भी है।

"प्रेमचंद के कहानियों में स्त्री पुरुष पात्र और उनके क्रिया–व्यापार महत्त्वपूर्ण हैं। लेकिन, व्यक्तिचित्रों की उद्भव प्रक्रिया और चिंतन प्रक्रिया में कालसीमा की कोई भी रुकावट नहीं है।" निर्मला, सेवासदन का व्यक्तिचित्र में स्त्री विषयक संवेदना उतनी ही मार्मिकता से अभिव्यक्त की गई है। "प्रेमा में पूर्णा द्वारा अमृतराय की विधवाओं की जीवन सुधारने के प्रयास के विरोध में समाज की अनैतिक व्यवहार का पूरजोर खण्डन किया है।"

प्रेमचंदजी के उपन्यास और उनमें सम्मिलित व्यक्तिचित्र–सुमन, गजाधर प्रसाद, पद्मसिंह, कृष्णचंद्र, शांता, सदनसिंह (सेवासदन), होरी, धनिया, गोबर, रायसाहब, मेहता, मालती (गोदान), प्रेमशंकर–ज्ञानशंकर (प्रेमाश्रम), रमानाथ–जालपा (गबन), सूरदास, जॉनसेवक, प्रभुसेवक, सोफि या (रंगभूमी), अमृतराय, पूर्णा (प्रतिज्ञा), अमरकांत, समरकांत, सुखदा (कर्मभूमि) जैसे व्यक्तिचित्र अपने विचार, अपने व्यक्तिगत सुख–दुःख, अपने आदर्श, अपनी न्यायप्रियता, ईमानदारी और वचनबद्धता के प्रति कितने प्रामाणिक हैं इसका सटीक मूल्यांकन प्रस्तुत विषय में नई दृष्टि प्राप्त कर देता है।"

प्रेमचंद युग एक प्रकार से भारत के लिए अस्मिता की खोज का युग है। सन् 1918 से 1936 तक का काल विभिन्न राजनीतिक आन्दोलन का केन्द्र रहा, जिसके परिणामस्वरूप समाज की वर्ण–व्यवस्था के आधारों में भी परिवर्तन आया। इसके पूर्व तक सदियों की दासता के कारण भारतीय जनता आत्मकेन्द्रित होती हुई रूढ़िग्रस्त होती गयी थी। पाश्चात्य साम्राज्यवादियों के आगमन ने देश में एक विराट तूफान खड़ा कर दिया। जिसके कारण पीढ़ियों से सुप्त जनता की चेतना शनैः शनैः जागृत होने लगी थी। पाश्चात्य मूल्यों पर आधारित शिक्षा ने देश के बौद्धिक पक्ष को आन्दोलित किया। फलतः भारतीय मनीषी अपने परिवेश की त्रासपूर्ण विघ्नकारी स्थिति के प्रति सजग हुए और उसके व्यापक सुधार की आवश्यकता की ओर उनका ध्यान आकर्षित हुआ। सत्ता के सम्बल से ईसाई धर्म प्रचार को भी बल मिला। ये पाश्चात्य जीवन पद्धति की गरिमा और भारतीय सांस्कृतिक निस्सारता का प्रसार करने लगे। राजनीतिक दासता के साथ–साथ इस सांस्कृतिक आक्रमण ने भारतीय चिन्तकों को और भी अधिक आन्दोलित किया।

फलतः भारत के बुद्धिजीवियों और समाज सुधारकों को अपने देश की कमजोरियों को दूर करने का बोध हुआ। परिणामस्वरूप भारतीय पुर्नजागरण का व्यापक आंदोलन प्रारम्भ हुआ। राजाराममोहन राय से लेकर प्रारम्भ हुई समाज सुधार की कड़ी में स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, गोपालकृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी इसमें श्रृंखलाबद्ध होते गये। इन सभी ने देश के गौरवशाली अतीत से मूल्यवान तत्वों को खोजकर उन्हें नये जीवन के अनुरूप ढालने का प्रयास किया, भले ही तत्कालीन युग के सभी साहित्यकार बुद्धिजीवी किसी एक विचारधारा का अन्धानुकरण न कर रहे हों, तथापि इनके आस–पास के वातावरण में राजनीतिक, सांस्कृतिक बदलाव उमगें भर रहा था। और इनके चेतन अचेतन मन में युगपुरूषों का प्रभाव भी संचारित हो रहा था। तत्कालीन लगभग समस्त साहित्यकारों पर गाँधीवाद का प्रभाव पड़ा, जिससे वे सामाजिक समस्याओं का निराकरण कर रहे थे।

सांस्कृतिक दृष्टि से यद्यपि उस समय के युग में यथार्थ संभावना से दूर था तथापि समाज के सामने साहित्यकार एक बेहतर भविष्य का स्वप्न दिखा रहे थे। ब्रिटिश शासन के सहयोग के लिए आयी वैज्ञानिक समृद्धि एवं पाश्चात्य शिक्षा ने समाज को प्रभावित किया। देश में संचार व्यवस्था, यातायात, यांत्रिकता और नयी शिक्षा पद्धति के कारण देश एक नयी आशा के साथ ही तनाव भी महसूस कर रहा था। यह स्थिति पारम्परिक भारतीय जीवन मूल्यों और आदर्शों के लिए चुनौती बन कर आयी। विभिन्न राजनीतिक संघर्ष की स्थितियों ने व्यक्ति में असफलता, कुण्ठा, विक्षोभ, क्रान्ति, तथा घोर व्यक्तिवादिता के स्वर मुखर किये।

प्रेमचंद को युगप्रवर्तक रचनाकार कहा गया है। वास्तव में उन्होंने साहित्यिक विद्या के उपन्यास, कहानी जैसी गल्प–किस्सागोई विद्या में जिन्दगी के यथार्थ तथा समाज की अहम समस्याओं को महत्ता प्रदान करते हुए इसे केन्द्रीयकरण किया। उसे मनुष्य के चरित्र का ही नहीं समाज तथा व्यवस्था के चरित्र का चित्र तथा दर्पण बनाया। उस समय युग की वास्तविक चाहे वह देश की परतन्त्रता हो या उसकी अकथनीय दरिद्रता, सामाजिक विषमतापूर्ण वर्ण व्यवस्था, पूँजीवाद, हो या मनुष्य मात्र का अपमान, वृहत सामाजिक अन्याय की विधायक शक्तियों पर कठोर प्रहार सब कुछ प्रेमचंद के साहित्य में समाहित है। सर्वप्रथम उन्होंने ही सामंती मानसिकता को साहित्य में छिन्न–भिन्न कर उसे अभिजात्य वर्ग से हटाकर आम भातरीय जनमानस के धरातल पर लाकर खड़ा किया। हिन्दी कथा साहित्य में यथार्थ की एक नयी परम्परा की प्रेमचंद ने बुनियाद रखी। वाह्य संघर्ष और परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए आत्म संघर्ष से प्रेमचंद का रचनाकार व्यक्तित्व विकसित होता गया। उनकी आस्थाएँ, विश्वास और एक प्रकार से उनका समग्र सामाजिक चिंतन गुणात्मक रूप से मुखर होता गया। इसका प्रमाण हमें उनके रचनागत विकास में मिलता है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद और शोषण की उसकी समस्त मशीनरी के प्रति वे जीवनपर्यन्त असहिष्णु रहे। उन्होंने कहीं भी उसकी पुलिस, कचहरी, कानून को नहीं छोड़ा, उस पर प्रहार करते हुए हर स्तर पर उसे बेनकाब किया।

प्रेमचंद विचारों की दिशा में क्रमशः समाजवाद के पास पहुँचते जा रहे थे। प्रायः सभी समस्याओं के समाध ान के लिए प्रेमचंद ने हर दशा में जनवादी सिद्धान्तों का आश्रय लेते हुए अपने उपन्यास और कहानी में ऐसे

विचारों का प्रचार किया कि जिन्हें राष्ट्रीय आंदोलन ने क्रमशः स्वीकार किया। जैसे–जैसे आंदोलन का आधार व्यापक हुआ और उसमें जनता के नये और अधिक क्रान्तिकारी अंगों का समावेश हुआ, वैसे–वैसे इन नये अंशों के प्रभावस्वरूप राष्ट्रीय आन्दोलन की मान्यताएँ भी बदलीं और वह क्रान्तिकारी जनता की आर्थिक–सामाजिक न्याय की मांगों को स्वीकर करने पर विवश हुआ। इस प्रकार प्रेमचंद ने यह सिद्ध किया कि एक महान लेखक सामाजिक जीवन का इतिवृत्तिकार ही नहीं वरन् दृष्टा भी होता है जो स्वप्न को भविष्य के पर्दे पर दिखता है।

समाज जीवन के प्रत्यक्ष यथार्थ को चित्रित करने के लिए प्रेमचंद की दृष्टि समाज के हर पहलू पर केन्द्रित हुई है। इसीलिए उनके कहानियों का फलक विराट है। उनके कहानियों में केवल जवान स्त्री–पुरुष ही नहीं, बच्चे और बूढ़े, अमीर और गरीब, गँवार और बुद्धिमान, किसान और साहूकार सब प्रकार के एवं समाज के हर पहलू का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग है। प्रेमचंद ने जिस सामाजिक परिवेश को अपनी अनुभूति का क्षेत्र बनाया है वह परिवेश जीवन की भली–बुरी रुढ़ियों से भरा है। ये रुढ़ियाँ कहीं धर्म का आसरा लेकर कर्मकाण्ड का रूप प्राप्त कर गयी है, तो कहीं कृत्रिम प्रतिष्ठा का सहारा लेकर सर्वसाधारण जनजीवन को निचोड़े जा रही हैं। प्रेमचंद की दृष्टि में सामाजिक आदर्श वे हैं, जहाँ मानवता के शाश्वत मूल्यों की पहचान होती है। प्रेमचंद के कहानियों का स्वर मनुष्यता की सही स्थापना का है और इस स्थापना के लिए पारम्परिक बंधनों से मुक्ति पाने की छटपटाहट है।

प्रेमचन्द ने खुले तौर पर समाज के ठेकेदारों पर व्यंग्य किया है कि उन्हीं की वजह से आज दुखियारी स्त्रियाँ वेश्या–जीवन अपनाने के लिए विवश होती हैं। प्रेमचन्द जी कहते हैं वेश्यावृत्ति के लिए स्त्री को उत्तरदायी न ठहराकर उसकी इस नीच वृत्ति के लिए विवश करने वाली परिस्थितियों को ही दोषी ठहराते हैं।

सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए प्रेमचन्द लिखते हैं कि आज समाज में सर्वत्र स्वार्थ का जाल है। लोग मात्र अपने स्वार्थ के कारण दूसरों का इस्तेमाल करते हैं। उन्हें उनके दुःख–सुख से कोई मतलब नहीं है।

समाज के ठेकेदार अपने कर्तव्यों को पूरा करने की अपेक्षा अपनी स्वार्थसिद्धि का साधन पहले तैयार करते हैं। वे ये कदापि नहीं सोचते हैं कि समाज पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा। वे तो केवल अपना स्वार्थ देखकर सामाजिक सेवा का ढोंग करते हैं।

यह अच्छा सिद्धान्त है कि जिसकी पहली स्त्री मर गयी हो, वह विधवा से विवाह करे। अमृतराय–न्याय तो यही कहता है। दाननाथ–बस, तुम्हारे न्याय–पथ पर चलने ही से तो सारे संसार का उद्धार हो जायगा। तुम अकेले कुछ नहीं कर सकते। हाँ, नक्कू बन सकते हो!

यह हमारे समाज की कैसी विचित्र माया है, जब एक व्यक्ति समाज में कुछ सुधार करना चाहता है तो उसका साथ देने के बजाय लोग उसके हौसले को तोड़ना चाहते हैं। मगर समाज के इन्हीं विरोधों के बीच में अकेले लोग अपने ऊँच विचारों के द्वारा समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन करते हैं। ऐसे ऊच्च विचारों से इतिहास भरा पड़ा है।

अकेले आदमियों ने ही आदि से विचारों में क्रान्ति पैदा की है। अकेले आदमियों के कृत्यों से सारा इतिहास भरा पड़ा है। गौतम बुद्ध कौन था? वह अकेला अपने विचारों का प्रचार करने निकला था और उसके जीवन–काल ही में आधी दुनिया उसके चरणों पर सिर रख चुकी थी। अकेले आदमियों से राष्ट्रों के नाम चल रहे हैं। राष्ट्रों का अन्त हो गया। आज उनका निशान भी बाकी नहीं, मगर अकेले आदमियों के नाम अभी तक चल रहा है।

यदि व्यक्ति अपने मन में दृढ़ विश्वास कर ले तो उसे नहीं रोक सकते हैं। इन सभी को बैठे–बैठे ऐसी ही

बेपर की उड़ाने को सूझती है। एक दिन पंजाब से कोई बौखल आया था। कह गया, जात—पात तोड़ दो, इससे देश में फूट बढ़ती है। ऐसे ही एक और जाँगलू आकर कह गया, चमारों—पासियों को भाई समझना चाहिए। उनसे किसी तरह का परहेज न करना चाहिए। बस, सबके सब, बैठे—बैठे यही सोचा करते हैं कि कोई नयी बात निकालनी चाहिए। बुड्ढे गाँधी जी को और कुछ न सूझी तो स्वराज्य ही का डंका पीट चले। सभी ने बुद्धि बेच खायी है।

अगर समाज में कुछ अच्छे लोग दबे तबके के लोगों को ऊंचा उठाना चाहते हैं, उनकी सामाजिक स्थिति सुधारना चाहते हैं तो समाज में रहने वाले अर्द्ध बुद्धि के लोग इसे मात्र इन प्रयासों में मदद करने के बजाय उनका मजाक उड़ाते हैं। समाज के इन्हीं अन्यायों की वजह से आज हम गर्त की ओर बढ़ते जा रहे हैं।

कमला प्रसाद सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य करते हैं दुनिया अन्धी है, उसके सारे व्यापार उल्टे हैं। मैं ऐसी दुनिया की परवाह नहीं करता।

......".अगर आज किसी दैवी बाधा से यह मकान गिर पड़े, तो हम कल ही इसे बनाना शुरु कर देंगे, मगर जब किसी अबला के जीवन पर दैवी आघात हो जाता है, तो उससे आशा की जाती है कि वह सदैव उसके नाम को रोती रहे। यह कितना बड़ा अन्याय है। पुरुषों नेयह विधान केवल अपनी काम—वासना को तृप्त करने के लिए किया है। बस इसका और कोई अर्थ नहीं। जिसने यह व्यवस्था की, वह चाहे देवता हो या ऋषि अथवा महात्मा, मैं उसे मानव—समाज का सबसे बड़ा शत्रु समझता हूँ। स्त्रियों के लिए पतिव्रत—धर्म की पंख लगा दी। पुनः संस्कार होता, तो इतनी अनाथ स्त्रियाँ उसके पंजे में कौन फँसती। बस, यही सारा रहस्य है। न्याय तो हम तब समझते, जब पुरुषों का भी यही निषेध होता।

उपन्यासकार ने सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए समाज में स्त्रियों के प्रति हुए अन्याय को प्रदर्शित किया है। वे चाहते हैं—यदि हमें उनके साथ न्याय करना है तो उन्हें समाज में पुरुषों के समान ही समझना चाहिए।

"यह अनन्त संसार केवल मूँों की बस्ती है। इसके विचारों का इसके गाँवों का सम्मान करना काँटों पर चलना है। यहाँ कोई नियम नहीं, कोई सिद्धान्त नहीं, कोई न्याय नहीं, इसकी जबान बन्द करने का बस एक ही उपाय है, इसकी आँखों पर पर्दा डाल दो और वह तुम से जरा भी एतराज न करेगी। इतना ही नहीं, तुम समाज के सम्मान के अधिकारी हो जाओगे। प्रेमाश्रम में प्रेमचन्द जी ने सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य किया है कि यह संसार केवल मूरों की बस्ती है जो जितना कपट, दगा व फरेब करता है, वही उपयुक्त है। उपन्यासकार ने गबन में सामाजिक व्यवस्था पर जालपा के माध्यम से व्यंग्य किया है। समाज में रहने वाले लोग स्वार्थी होते हैं। उन्हें दूसरों की मदद करने में कोई दिलचस्पी नहीं होती। हाँ, वे जहाँ कोई ऐसी घटना घटते देखते हैं, जिसके द्वारा समाज की प्रचलित प्रक्रियाओं में अवरोध उत्पन्न होता है तो एक साथ हो लेते हैं। लेकिन उन्हें इससे मतलब नहीं कि ये सुधारवादी क्रिया है या मानवतावादी।

"दुनिया कैसी अपनी राग—रंग में मस्त है। जिसे उसके लिए मरना हो मरे, वह अपनी टेव न छोड़ेगी। हर एक अपना छोटा—सा मिट्टी का घरौंदा बनाये बैठा है? देश बह जाये, उसे परवाह नहीं। उसका घरौंदा बचा रहे। उसके स्वार्थ में बाधा न पड़े। उसका भोला—भाला हृदय बाजार को बन्द देखकर खुश होता। सभी आदमी शोक से सिर झुकाये, त्योरियाँ बदले उन्मत्त से नजर आते। सभी के चेहरे भीतर की जलन से लाल होते। वह न जानती थी कि इस जन—सागर में ऐसी छोटी छोटी कंकड़ियों के गिरने से एक हल्कोरी भी नहीं उठता, आवाज तक नहीं आती।

समाज की व्यवस्था पर मुंशी जी ने सवालिया निशान लगाते हुए कर्मभूमि में लिखते हैं कि हराम का खाने वाले, धर्म की आड़ में अनैतिक कृत्य करने वाले, मर्यादाओं की दुहाई देने वाले धर्म के ये ठेकेदार जो स्वयं

दूषित भावनाओं से ओत–प्रोत हैं, समाज को किस प्रकार ऊंचाई की ओर ले जा सकते हैं –––"कितनी भयंकर स्थिति होगी! कैसा कुहराम मचेगा? कोई धर्म के नाम को रोयेगा, कोई मर्यादा के नाम को रोयेगा। दगा, फरेब, जाल, विश्वासघात, हराम की कमाई सब मुआफ हो सकती है। नहीं, उसकी सराहना होती है। ऐसे महानुभाव समाज के मुखिया बने हुए हैं। वेश्यागामियों और व्यभिचारियों के आगे लोग माथा टेकते हैं, लेकिन शुद्ध हृदय और निष्कपट भाव से प्रेम करना निन्द्य है, अक्षम्य है।

–हम समाज की रूढ़िवादी परम्परा का निर्वहन हमेशा से करते आये हैं और यही स्थिति रही तो करते रहेंगे। समाज ने जो हमारे लिए निर्धारित कर दिया है, वही उचित है। अगर हम इससे हटकर कुछ करना चाहें तो यह समाज–विरोधी होगा, जिसका परिणाम समाज से निष्कासन है। अमरनाथ कहते हैं–

संसार में किसी न्यायी ईश्वर का राज्य नहीं है। जो चीज जिसे मिलनी चाहिए, उसे नहीं मिलती। इसका उल्टा ही होता है। हम जंजीरों में जकड़े हुए हैं। खुद हाथ–पाँव नहीं हिला सकते। हमें एक चीज दे दी जाती है और कहा जाता है कि इसके साथ तुम्हें जिन्दगी भर निर्वाह करना होगा। हमारा धर्म है कि उस चीज पर कनाअत करें। चाहे हमें उससे नफरत ही क्यों न हों अगर हम अपनी जिन्दगी के लिए कोई दूसरी राह निकालते हैं, तो हमारी गर्दन पकड़ ली जाती है, हमें कुचल दिया जाता है। इसी को दुनिया इंसाफ कहती है।

समाज में फैले भ्रष्टाचार, पापाचार की ओर जब उपन्यासकार की नजर दौड़ती है तो उन्हें बड़ी आत्म–ग्लानि होती है। वे कहते हैं कि हमें अपनी पुरानी संस्कृति को फिर से लाना होगा। जहाँ प्यार था, अपनापन था। जहाँ ऊँच–नीच का कोई भेद नहीं था।

"जब हम अपने चारों ओर फैले हुए अन्धकार को देखता हूँ, तो मुझे सूर्योदय के सिवाय उसके हटाने का कोई दूसरा उपाय नहीं सूझता। किसी दफ्तर में जाओ, बिना रिश्वत के काम नहीं चल सकता। किसी घर में जाओ, वहाँ द्वेष का राज्य देखोगे। स्वार्थ, अज्ञान, आलस्य ने हमें जकड़ रखा है।

प्रेमचंन्द अपने कहानियों में केवल समस्या प्रस्तुत ही नहीं करते, वरन् उसका हल भी करते हैं। यह आवश्यक नहीं कि उन्होंने सदैव ही हल बताया हो। आचार्य विनय मोहन शर्मा के शब्दों में "वे समाज–व्यवस्था पर एक हाथ से प्रहार करते थे और दूसरे हाथ से उसको सहलाते थे। समाज की बुराइयों पर प्रस्तुत करना ही वे अपना धर्म न मानते थे, प्रत्युत उनका हल खोलना भी वे आवश्यक समझते थे।"

निष्कर्ष

मुंशी प्रेमचंद का कथा साहित्य भारतीय समाज के यथार्थ को सामने लाता है, जिसमें पाश्चात्य प्रभाव और भारतीय परंपराओं का संघर्ष दिखाया गया है। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में समाज के हर वर्ग को स्थान दिया और उनकी समस्याओं को चित्रित किया। उनका लेखन न केवल समाज की कुरीतियों और असमानताओं को उजागर करता है, बल्कि इन समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है। उनके पात्रों के माध्यम से समाज में सुधार की आवश्यकता को बल मिलता है, और यह दर्शाया जाता है कि एक व्यक्ति का दृढ़ संकल्प और संघर्ष ही सामाजिक बदलाव ला सकता है। प्रेमचंद का साहित्य आज भी समाज सुधार की दिशा में प्रेरणादायक है और उनकी दृष्टि भारतीय समाज के लिए समयोचित और अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ

सुंदरम, आर. एस. (2018)। प्रेमचंद की गोधन में सामाजिक वर्चस्व और वर्ग संघर्ष। एंगलिस्टिकम पत्रिका, 4(9–10), 217–219।

यूनस, एम., परवेज, बी., और रियाज, बी. (2022)। लघु कथाओं के अंग्रेजी अनुवाद का विश्लेषणः प्रेमचंद। ग्लोबल लैंग्वेज रिव्यू, टप्प्।

नसीर, एच. ए. (2021)। मुंशी प्रेमचंद की लघु कहानी कफन का मार्क्सवादी विमर्श विश्लेषण।

पॉल, पी. (2021)। अम्बेडकर को नमस्कारः अजय नवारिया के हिंदी लघु कथा साहित्य के माध्यम से चेतना को समझना। दक्षिण एशियाई समीक्षा, 42(1), 18–33।

सिंह, एस. के. (2020)। उपनिवेशकालीन उत्तर भारत में प्रेमचंद की कहानियों में नारी का बदलता चित्रणः अनुकूलता और प्रतिरोध के बीच। भारतीय समाजशास्त्र में योगदान, 54(3), 254–276।

पांडे, आर. पी., और मिश्रा, एस. के. (2019)। भारतीय साहित्यिक परंपरा और संस्कृति में हाशिए पर पड़े लोगों के बारे में कथाओं में परिवर्तन। बीआरजे, 1(2), 197–215।